अक्रम यूथ

मार्च 2021 हिन्दी दादा भगवान परिवार

अपनी गरज से मोक्ष में जाने वाले कैसे होते है?

अनुक्रमणिका

5	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **अपनी गरज से मोक्ष में जाने वाले!**
6	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **परम विनय वाले!**
9	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **किसी का दोष नहीं देखते**
10	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **निरंतर आत्मी के बारे में ही विचारणा करते हैं**
12	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **सदा सिन्सियर**
14	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **एवरीव्हेर एडजस्ट हो जाते हैं।**
18	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **कल्याण की भावना वाले**
20	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **किसी को दुःख नहीं देते**
22	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **ज्ञानी का राजीपा प्राप्त करते हैं**
23	मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? **हर एक कदम पर सोचते हैं, 'क्या ज्ञानी राजी होंगे?'**

मार्च **2021**

वर्ष : 8, अंक : 10

अखंड क्रमांक : 94

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

युवा मित्रों, जीवन में जब हम किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति से मिलते हैं तो उनके किसी न किसी गुणों से प्रभावित और आकर्षित हो जाते हैं। और नियम ऐसा ही है कि जो गुण हममें न हो तो और सामने वाले व्यक्ति में वे गुण हो, तो उस व्यक्ति के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षण हो ही जाता है और उन्हें देख-देखकर ही हममें भी उन गुणों का विकास होने लगते हैं। तो चलिए इस अंक में हम एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का परिचत प्राप्त करते हैं।

ज्यादातर ज्ञानी पुरुष और भगवंत तो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके उसी जन्म में निर्वाण पद की प्राप्ति कर लेते हैं। बहुत कम ऐसे प्रसंग देखे गए हैं जैसे कि महावीर भगवान 42 वर्ष की आयु में केवलज्ञान प्राप्त करके 72 वर्ष तक विचरते रहे। कृपालुदेव आत्मज्ञान प्राप्त करके कम उम्र में ही विदा हो गए और बहुत कम लोग उनके संपर्क में आ पाए। दादाश्री को 1958 में अक्रम ज्ञान प्राप्त हुआ। और 32 वर्षो तक ज्ञान बाँटते रहे। दादाश्री के कृपा पात्र नीरू माँ, दादाश्री से ज्ञान प्राप्त करके निरंतर 38 वर्षो तक अक्रम झंडा फहराते हुए हमारे बीच रहे। और हम सभी के लाडले पूज्यश्री 17 वर्ष की उम्र में दादा से ज्ञान प्राप्त करके, पूज्य नीरू माँ के सहाध्यायी रहे, पिछले 50 वर्षो से दादाश्री के सूत्रधार के समान, हमारे बीच आज प्रत्यक्ष हाज़िर हैं।

हम सब बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें '50th गोल्डन जुबली ज्ञान वर्ष' मनाने का अलौकिक मौका मिला है। 'अपनी गरज से मोक्ष जाने वाले कैसे होते हैं?' उसे देखने का और देख-देख कर सीखने का सुदंर अवसर हमें मिला है।

युवा मित्रों, इस महीने का अक्रम यूथ का अंक भी आप सभी के लिए विशेष प्रेरणा लेकर आया है। तो चलो, इस अंक द्वारा हम पूज्यश्री दीपकभाई के जीवन के दिव्य प्रसंगों से "मोक्षमार्गी कैसे होते हैं?" उसकी झांकी करवाने वाले विविध प्रसंगों को हम याद करते रहेंगे ताकि हमें पुरुषार्थ करने की नई दृष्टि मिले और हम भी ज्ञानी पुरुष द्वारा अनुभव किए हुए और निर्देशित मार्ग पर आगे बढ़ सकें।

- डिम्पल महेता

प्रश्नकर्ता : अपनी गरज से मोक्ष में जाने वाले के लक्षण क्या-क्या होते हैं, उसके लिए क्या पुरुषार्थ कर सकते हैं?

नीरू माँ : अपनी गरज से जो मोक्ष जाना चाहता है, उसका आइडियल अगर आप किताब में देखना चाहते हैं तो श्रीमद् राजचंद्र को देखें और अगर प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं तो अपने दीपक भाई को देखें, वे अपनी गरज से मोक्ष में जाना चाहते हैं।

कहीं पर भी थोड़ा सा भी नुकसान नहीं होने देते! ज़रा सी भी विशेषता दिखाए बगैर वे पर्दे के पीछे रहते हैं। दृष्टि भीतर ही रहती है, उनकी दृष्टि में यही रहता था कि 'मेरी गलती कहाँ पर हो रही है', बाहर कहीं भी दृष्टि नहीं रहती।

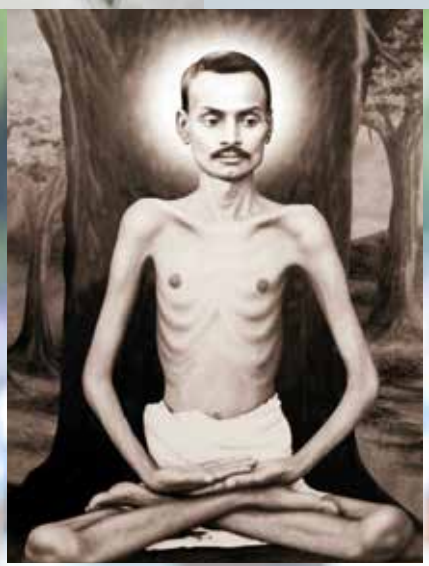

अपनी गरज से मोक्ष में जाने वाले!

परम पूज्य दादाश्री और पूज्य नीरू माँ से आशीर्वाद प्राप्त आत्मज्ञानी पूज्य दीपक भाई में ज्ञानी की कृपा से ऐसे अनेक उमदा गुण विकसित हुए हैं। मोक्ष में जाने वालों के गुण कैसे होते हैं, उसका उत्कृष्ट उदाहरण है पूज्य दीपक भाई।

चलो, इनमें से कुछ गुणों को विस्तारपूर्वक समझें...

परम विनय वाले!

दादाश्री के पुस्तक की झलक

प्रश्नकर्ता : किसी को आपके जैसा ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसका वर्तन कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : माँ-बाप के प्रति विनय होना चाहिए, उनकी आज्ञा में रहना चाहित। यहाँ पर भी परम विनय होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : परम विनय का मतलब क्या है?

दादाश्री : अहंकाररहित स्थिति। ज्ञान का स्वभाव कैसा है कि ऊपर से नीचे आता है। अतः यदि परम विनय चूके तो वह ज्ञान को ही वापस कर देगा!

परम विनय अर्थात् ग्रहण करते रहना। पूज्य लोगों का राजीपा (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करना। फिर भले ही वे मारें-कूटें, लेकिन वहीं पर पड़े रहना! अविनय के सामने विनय करना, उसे गाढ़ विनय कहते हैं और अविनय से दो थप्पड़ मार दे, तब भी विनय रखना, उसे परम अवगाढ़ विनय कहते हैं। यह परम अवगाढ़ विनय जिसे प्राप्त हो गया, वह मोक्ष में जाता है। उसे सद्गुरु या किसी की भी ज़रूरत नहीं है। स्वयं बुद्ध बनेगा, उसकी मैं गारन्टी देता हूँ।

माता-पिता के प्रति विनय

पूज्यश्री : मुझे तो सत्रह साल की उम्र में ही दादा भगवान मिल गए थे इसलिए फादर और मेरे बीच विचार भेद के कारण कई बार प्रॉब्लम होते थे। वे मेरी शादी करवाने के पीछे पड़े रहते थे। शुरू-शुरू में तो वे कहते थे कि 'तू पढ़, ऐसा कर, वैसा कर', लेकिन जब सत्संग में ज्यादा जाने लगा तो कहते, "इतना ज्यादा सत्संग करता रहता है, घर में नहीं बैठता, काम नहीं करता, ऐसा नहीं करता!" पढ़ाई में मेरी बहुत अच्छा प्रोग्रेस थी। पढ़ाई खत्म होने के बाद जॉब पर जाना शुरू किया, धीरे-धीरे बिज़नेस करना शुरू किया, उसमें भी बहुत अच्छी प्रोग्रेस थी।

यों धारे-धीरे पाँच-सात साल बीत गए फिर मुझसे कहने लगे, "अच्छा हुआ तूने शादी नहीं की, मेरे साथ तो रहा।" आखिर तक हर तरह से फादर और मदर की सेवा की। फिर फादर तो बहुत खुश हुए और बाद में तो मुझे यही कहते थे कि, "तू तो मेरा गुरु है। तूने जो लाइन पकड़ी है वह बहुत अच्छी है। मेरे मोक्ष के लिए और मेरे व्यवहार में भी यह काम आया।"

अतः दादा का ज्ञान मिलने के बाद शुरू-शुरू में कुछ साल यों कॉन्फ्लिक्ट में बीते। उस समय मेरे पास ज्ञान था, 'वे शुद्धात्मा ही हैं।' वे मुझे चाहे जैसा उल्टा-सीधा कहते लेकिन मैं हमेशा उन्हें आत्मदृष्टि से ही

"अच्छा हुआ तूने शादी नहीं की, मेरे साथ तो रहा।"

देखता था और फादर के प्रति मेरा विनय ज़रा सा भी चूकने नहीं देता था। दादा के ज्ञान से मुझे निरंतर यह दृष्टि रहती थी कि उनका दोष नहीं है, मेरा हिसाब है। वे चाहे जैसा कहें, वह उनका व्यू पोइन्ट है लेकिन मैं उन्हें दुःख नहीं देना चाहता। मुझे अंत तक यह निरंतर जागृति रही।

परम विनय

प्रश्नकर्ता : नीरू माँ ने कभी तो दीपक भाई को डाँटा होगा न?

आप्तपुत्री : अरे बहुत! नीरू माँ तो कैसे डाँटते थे! एक दिन तो आधे घंटे तक लगातार डाँटते रहे। मुझे तो इतना आश्चर्य हो रहा था कि, दीपक भाई सफाई क्यों नहीं देते, सही हकीकत क्यों नहीं समझाते! सुनते रहे लेकिन ऐसा नहीं कहा कि, 'नीरू माँ, इस कारण से ऐसा हुआ, मुझे देर हो गई', ऐसा कुछ भी नहीं। उन्हें तो ऐसा ही लगता था कि नीरू माँ जो कह रहे हैं वह ठीक ही है। और मेरा तो उनसे बिल्कुल विपरीत था। मैं तो नीरू माँ को अपनी परिस्थिति समझाती, मेरी बुद्धि इतनी ज्यादा चलती थी कि लगातार आर्ग्युमेन्ट करती थी, हकीकत बता कर मेरी गलती नहीं है ऐसा पूव करने की कोशिश करती थी। पर दीपक भाई कभी किसी प्रकार की आर्ग्युमेन्ट ही नहीं करते थे। अगर नीरू माँ जो कहें उसे हृदयपूर्वक 100% स्वीकारते थे। और खुद की ही गलती ढूँढ़ कर उस पर जागृति रखते थे। ऐसा परम अवगाढ़ विनय कि अगर नीरू माँ (दीपक भाई को तैयार करने के लिए) दो लगा भी दे तब भी उनके प्रति परम विनय कभी नहीं टूटता था।

किसी का दोष नहीं देखते

किसी को भी दुःख देकर हम मोक्ष में जा सकें, ऐसा नहीं हो सकता। किसी को दुःख दिया हो तो वह जाते समय हमें रस्सी से बांध देगा जाने नहीं देगा। और हम यदि सभी को सुख देंगे तो सभी जाने देंगे।

निरंतर आत्मा के बारे ही विचारणा करते हैं

नीरू माँ : कई सालों पहले नीरू माँ और दादा औरंगाबाद में थे। फिर दीपक भाई मुंबई से ट्रेन में औरंगाबाद आए। ट्रेन बदल कर आना पड़ता था इसलिए दूसरी ट्रेन की राह देखते-देखते 15-16 घंटे में पहुँचे।

दीपक भाई जब दादा से मिलने आए तब दादा ने पूछा, "इतने घंटों तक क्या कर रहा था?" दीपक भाई ने कहा, "ट्रेन में ऊपर चढ़कर लेट गया। लेट तो गया लेकिन एक सेकेंड के लिए भी नींद नहीं आई। बस, मेरे अंदर आत्मा के बारे में ही विचार चल रहे थे। दादा! जब से आपके दर्शन किए तब से ऐसा नॉन स्टॉप चल रहा था।"

फिर दादा ने कहा,

"कृपालुदेव के अंदर जो चल रहा था न, ज्ञानांक्षेपकवंत, उसी दशा में है तू।"

नीरू माँ : यानी यह साधारण काम नहीं है, किसी-किसी को ही ऐसा होता है। आत्मा की ही बात, दूसरे कोई विचार भी नहीं आते।

खाना-पीना नहीं, फेरी वाले आएँ, फिर भी कुछ नहीं, सिर्फ आत्मा का ही। कौन सा स्टेशन आया वह भी नहीं देखते गाड़ी से। सब उतर गए, अब उसे भी उतरना पड़ेगा। कोई कहे कि 'साहब उतरिए' तब यह उतर जाता।

आप्तपुत्र : दीपक भाई का सोलह घंटे का कहा, तो मुझे भी इसी तरह सोलह घंटे-बीस घंटे कन्टिन्युअस दादा के काम के विचार आते हैं। कन्टिन्युअस, उसमें कहीं ब्रेक नहीं होता। ऐसा कई सालों से चल रहा है, तो अब उसमें आत्मा की ओर कैसे आगे बढ़ा जाएँ? क्योंकि शक्ति तो है लेकिन फिलहाल सारी शक्ति पुद्गल में ही खर्च हो रही है।

नीरू माँ : यदि दादा के काम के विचार नहीं होते तो संसार के विचार चलते रहते। व्यापार-नौकरी के, पत्नी के, बच्चों के बारे में विचार आते। एक स्टेप आगे बढ़ा कि भाई, यह संसार के विचार नहीं आते, लोक कल्याण के कार्यों के आते हैं। ऐसे करते-करते कभी ऐसा मोड़ आएगा कि आत्मा के ही विचार आएँगे। तैयारी रखना कि ये बदल जाए और आत्मा के विचार में लीन हो जाएँ तो उत्तम।

मुझे दीपक भाई जैसा नहीं था। मुझे तो हर समय दादा की सेवा के ही विचार आते थे। सेवा के नहीं तो दादा के, मुझे अन्य किसी भी प्रकार के विचार ही नहीं आते थे।

सतत आत्मा के ही विचार

दादा के और दादा की सेवा के ही विचार

संसार में व्यापार के, पत्नी के, बच्चों के बारे में ही विचार

व्यवहार के विचार छूटते जाते हैं वैसे-वैसे आत्मा के विचार बढ़ते जाते हैं।

सदा सिन्सियर

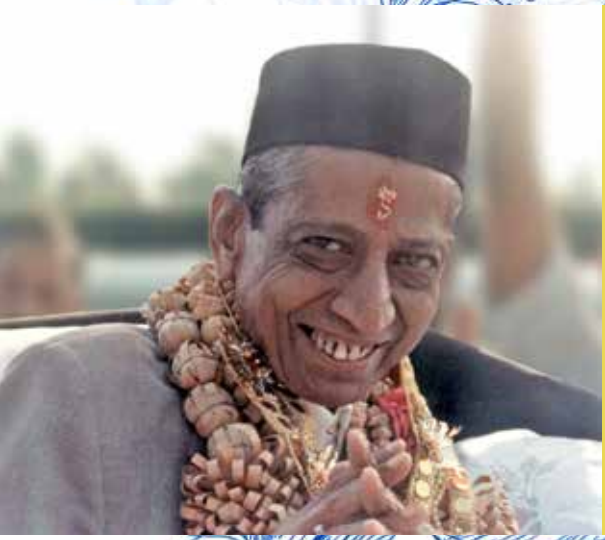

दादाश्री : सिन्सियरिटी अर्थात् वह मूल आत्मा के नज़दीक की बाउन्ड्री का ही गुण है। सिन्सियर अर्थात् जो खुद के प्रति भी सिन्सियर रहे और औरों के प्रति भी। ऐसा नहीं है कि यह मेरा नहीं है। ऐसा नहीं कि 'यह मेरे साहब हैं इसलिए सिन्सियर रहता हूँ और इनके प्रति नहीं रहूँगा।' स्वभाव से ही सिन्सियर होता है।

जो हर एक बात में सिन्सियर रहेगा वही मोक्ष में जाने की निशानी!

नीरू माँ : दादा ने दीपक भाई के लिए बहुत बढ़िया कहा था कि उनमें सिन्सियरिटी का बहुत उच्च गुण है। जो भी करेंगे वह सिन्सियरली करेंगे और अंत में पार उतर जाएँगे यानी सिन्सियरिटी उन्हें बहुत आगे लेकर जाएगी।

पूज्यश्री के स्वमुख से...

मुझे अगर खिड़की बंद करनी पड़े तो किस भावना से करता हूँ? मच्छर न आ जाएँ। मच्छर आकर किसी को काटेंगे तो वह बीमार पड़ जाएगा। 15 दिन बिगड़ेंगे और दादा के काम डिस्टर्ब हो जाएँगे।

मशीनरी को सिन्सियरली इस तरह से रिपेर करता हूँ कि 3-4 महीनों के लिए सत्संग में जाऊँ तब भी ना बिगड़े।

कल मेरी जगह पर कोई और आए, तो उसे भी सुविधा रहे ऐसी सेटिंग करता हूँ ताकि उस व्यक्ति के प्रति और काम के प्रति भी हर तरह से सिन्सियर।

अपनी सुविधा नहीं देखता। मैं डबल मेहनत कर लूँगा लेकिन महात्माओं को उनके समय पर मिल जाना चाहिए। उन्हें समय पर मिल जाए वह हमारी सिन्सियरिटी।

ढ़ीला-ढ़ाला नहीं, कपालभाती करते समय पहली साँस जितनी डीप होती है उतनी ही डीप आखिरी साँस भी होती है। एक समान ही रहता है, सिन्सियर यानी सिन्सियर।

दो संयोगों के बीच अगर समय मिले - दो मिनट, पाँच मिनट, दो घंटे, तब अपने स्वरूप के प्रति सिन्सियर रहता हूँ।

हर समय दादा के प्रति सिन्सियर, काम के प्रति सिन्सियर, व्यक्ति के प्रति सिन्सियर। जिस समय पर जो आए उसके प्रति 100% सिन्सियर रहता हूँ।

एवरीव्हेर एडजस्ट हो जाते हैं।

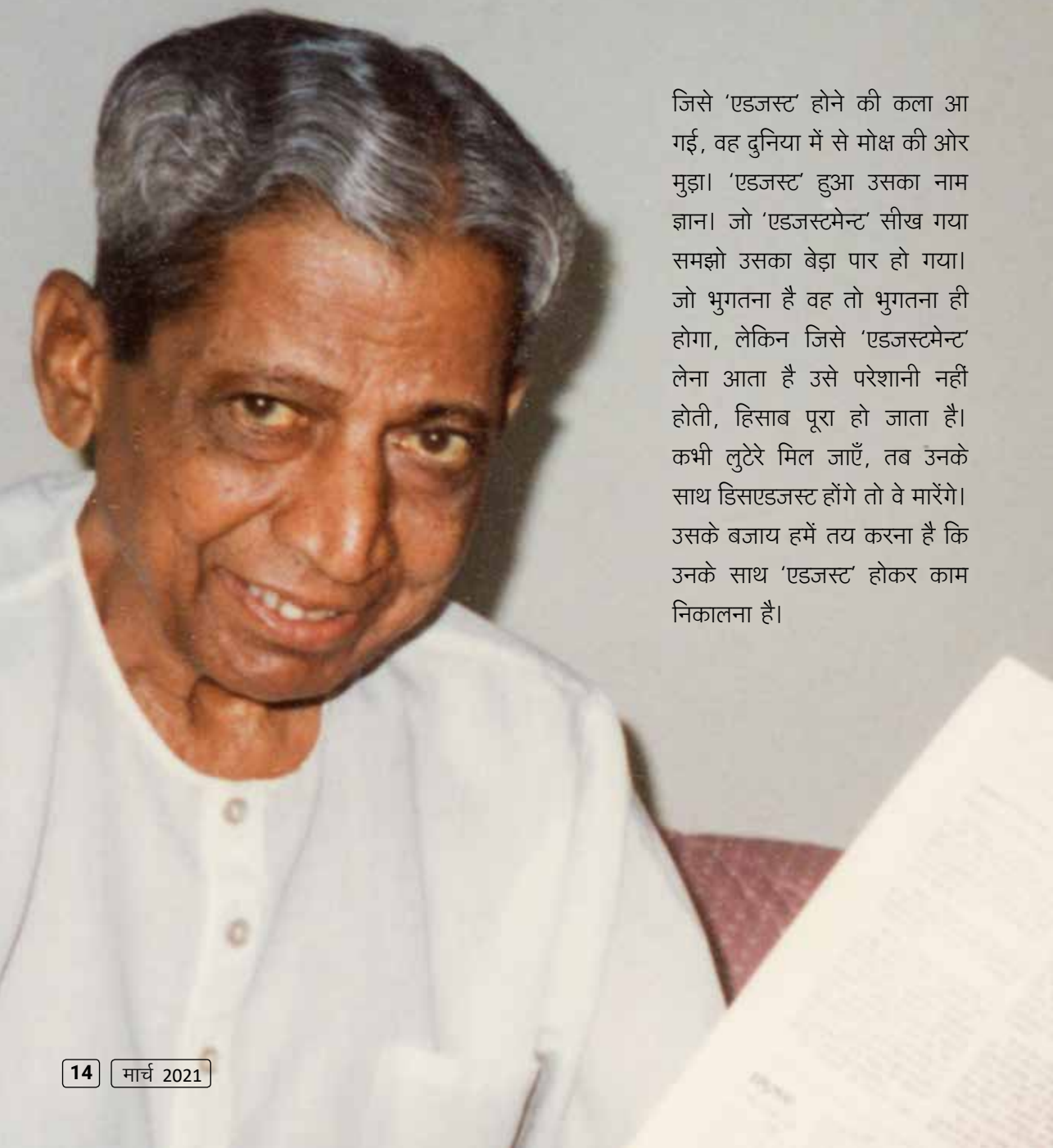

जिसे 'एडजस्ट' होने की कला आ गई, वह दुनिया में से मोक्ष की ओर मुड़ा। 'एडजस्ट' हुआ उसका नाम ज्ञान। जो 'एडजस्टमेन्ट' सीख गया समझो उसका बेड़ा पार हो गया। जो भुगतना है वह तो भुगतना ही होगा, लेकिन जिसे 'एडजस्टमेन्ट' लेना आता है उसे परेशानी नहीं होती, हिसाब पूरा हो जाता है। कभी लुटेरे मिल जाएँ, तब उनके साथ डिसएडजस्ट होंगे तो वे मारेंगे। उसके बजाय हमें तय करना है कि उनके साथ 'एडजस्ट' होकर काम निकालना है।

एडजस्टमेन्ट लेना नहीं पड़ता, हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : पूज्यश्री एडजस्टमेन्ट किस तरह से लेते थे? उस बारे में थोड़ी बातें कीजिए न।

आप्तपुत्री : पूज्यश्री तो सहज रूप से एडजस्ट ही हो जाते थे। किस तरह निरंतर अधिक से अधिक नीरू माँ का ध्यान रखा जाए, किस तरह उनकी सुविधाओं का ध्यान रखा जाए, किस तरह उनकी मदद की जाए ताकि नीरू माँ दादा का काम और भी अच्छी तरह से कर सकें, उनके चित्त में निरंतर यही विचार चलते रहते थे। उनके लक्ष्य में निरंतर नीरू माँ थे इसलिए उनकी अनुकूलता के अनुसार आसानी से एडजस्ट हो जाते थे।

ट्रेन में बैठे हुए नीरू माँ का एक फोटो है। ट्रेन में ऊपर वाली सीट पर नीरू माँ बैठे हैं और सामने एक बहन बैठी हैं। इस तरफ वाली सीट पर दीपक भाई बैठे हैं और दूसरी तरफ आप्तपुत्री बहन बैठी हैं। दीपक भाई की खुद की बैठने की जगह चाहे जो भी हो, लेकिन नीरू माँ को कोई तकलीफ़ नहीं है न? उनका चित्त निरंतर नीरू माँ में और ज्ञानवाणी में रहता था। बस उनका चित्त और कहीं भी नहीं रहता था।

नीरू माँ तो जगत् कल्याण के बहुत बड़े निमित्त थे और पूज्यश्री निरंतर उनके परम विनय में रहते थे। अभी भी पूज्यश्री अपनी बजाय अपने साथ वालों के बारे में ही सोचते हैं फिर चाहे संकुल हो या महात्मा हों। उनके द्वारा किसी को ज़रा सी भी तकलीफ़ न हो उसके लिए आसानी से ऐसा एडजस्टमेन्ट कर लेते हैं कि सामने वाले को पता भी नहीं चलता।

दादा दरबार में पूज्यश्री का एडजस्टमेन्ट

सेवार्थियों के शब्दों में...

जब बुर्जुग या बीमार मुमुक्षु दर्शन करने आते हैं तब पूज्यश्री दोनों पैर इतने ऊँचे उठा देते हैं कि सिर्फ सिर झुकाते ही दर्शन हो जाते हैं और उन्हें दर्शन का संतोष भी हो जाए।

जब चार-पाँच लोगों को फोन पर विधि करवानी हो तब दोनों हाथों से दो-दो फोन आराम से पकड़ लेते हैं। उनका आशय इतना ही रहता है कि सभी को पूज्यश्री की आवाज साफ सुनाई दे और हर एक को ऐसा ही लगे कि मेरे साथ बात कर रहे हैं। सभी को संतोष मिले इसलिए उनका ऐसा एडजस्टमेन्ट रहता है।

वज़नदार मूर्ति लेकर कोई आए हों और खड़े-खड़े पूज्यश्री से बातें कर रहे हों तब मूर्ति वज़नदार होने के बावजूद भी प्रेम से अपनी गोद में रख लेते हैं ताकि महात्मा को तकलीफ़ कम हो।

पूज्यश्री को खुद को **AC** की ज़रूरत नहीं होती है, फिर भी दरबार में हाज़िर लोगों के कम्फर्ट के लिए **AC** या पंखा चालू करवाते हैं और किसी को पता भी नहीं चलता कि उनके लिए चालू किया है।

हम भी अगर पूज्यश्री की तरह हमारे चित्त में ऐसी भावनाएँ रखें कि हमारे मम्मी-पापा, टीचर्स, मित्रों या रिश्तेदारों, किसी को तकलीफ़ न हो, कैसे उन्हें हेल्प करूँ, कैसे उनका भला हो सके, तो एडजस्टमेन्ट करने नहीं पड़ेंगे, नैचुरली हो जाएँगे।

मोक्ष में जाने वाले कैसे होते हैं? // कल्याण की भावना वाले //

प्रश्नकर्ता : आपके पीछे कुत्ता पड़ जाए तो आप क्या करेंगे?

पूज्यश्री : पड़ जाए तो मैं तो उठऊँगा, क्यों गिर गया? मोक्ष में जाने वाला किसी को गिराने का काम नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं, कुत्ता अगर आपके पीछे दौड़े तो आपके हाव-भाव कैसे होंगे?

पूज्यश्री : उसके शुद्धात्मा देखूँगा, और क्या? उससे कहूँगा, "बेटा, शांति से बैठ। तुझे कुछ खाना है? बिस्किट खाएगा या टोस्ट खाएगा?" उसे पूछूँगा। वह कहे कि 'बिस्किट', तो उसे बिस्किट दूँगा। इन कुत्तों को तो थोड़ा सा कुछ खाना मिल जाए तो झगड़ना भूल जाते हैं, बोलो।

प्रश्नकर्ता : दीपक भाई, मान लीजिए कि एक दिन के लिए आपको द प्रेसिडन्ट ऑफ इन्डिया बना दिया जाए तो आप क्या करेंगे?

पूज्यश्री : सभी को ज्ञानविधि में बिठा दूँगा।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानविधि के अलावा और क्या करेंगे?

पूज्यश्री : त्रिमंदिर के काम में हेल्प करूँगा, और कुछ नहीं करूँगा।

प्रश्नकर्ता : आपको जादुई चिराग मिल जाए तो आप क्या करेंगे?

पूज्यश्री : हाँ, तो जल्दी-जल्दी दादा-नीरू माँ को बुला लूँगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं, और भी कुछ हो सके ऐसा क्यों नहीं माँगेंगे?

पूज्यश्री : लो, ऐसा तो कहाँ कुछ माँगने जैसा है? और अगर जादुई चिराग मिल जाए न तो सभी को बड़े हवाई जहाज में बिठाकर सीमंधर स्वामी के पास ले जाऊँगा। किसी को नहीं छोड़ूँगा, इच्छा हो या न हो सभी को बिठाकर भगवान के पास ले जाऊँगा।

किसी को दुःख नहीं देते

जैसे रास्ता पार करते समय मनुष्य अपनी सेफ साइड के लिए कितनी जागृति रखता है? उसी तरह इस मोक्ष मार्ग की सेफ साइड के लिए भी उतनी ही जागृति की आवश्यकता है।

किसी को दुःख देकर कोई मोक्ष में नहीं जा सकते

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो कहा है कि हर रोज़ सुबह उठकर तय करो कि 'प्राप्त मन-वचन-काया से किसी को भी दुःख न हो।'

दादाश्री : प्राप्त अर्थात् हमें जो मिला है वह, मन-वचन-काया। यदि आपका मन सामने वाले के लिए बिगड़ जाता है फिर भी आपको ऐसे भाव करने हैं कि 'किसी को दुःख न हो' किसी को दुःख देकर आप मोक्ष में जा सको, ऐसा नहीं हो सकता। किसी भी जीव को, आपके दुश्मन को भी दुःख देकर आप मोक्ष में नहीं जा सकते।

कोई जीव किसी को किंचित्मात्र भी दुःख देकर मोक्ष में नहीं जा सकता, फिर वे साधु महाराज हों या चाहे जो हों। सिर्फ शिष्य को ही दुःख होता हो, तब भी महाराज को यहाँ रुके रहना पड़ेगा, चलेगा ही नहीं!

ज्यों-त्यों करके हल लाइए

जिसे मोक्ष में जाना है, उसे ऐसा नहीं लगता कि 'ऐसा करना चाहिए और वैसा करना चाहिए।' जैसे-तैसे करके काम पूरा आगे बढ़ जाना चाहिए। उसे पकड़कर नहीं रखना चाहिए! जैसे-तैसे करके हल कर देना चाहिए।

जय सच्चिदानंद...

सितम्बर 2005 में दुबई सत्संग ट्रिप थी। फॉरेन ट्रिप है और पूज्यश्री के साथ जाने मिल रहा है इसलिए मदर ने मुझे 5-6 जोड़ी कुर्ते पायजामें सिलवाकर दिए। ट्रिप के तीन दिन पहले पूज्यश्री का फोन आया, "मुझे लग रहा है कि मैं भी कुर्ते-पायजामें सिलवा लूँ। तुम तुरंत कपड़े का सेम्पल लेकर आओ। मैं अगले दिन कन्फर्म कर दूँगा, उसके बाद सिलने के लिए दे देना।"

अहमदाबाद में एक महात्मा की कपड़े की दुकान थी। दुकान से ही मैंने दीपकभाई के साथ फोन पर बात की। दीपकभाई ने पूछा, 'कपड़ा कैसा है?' मैंने कहा, 'अच्छा है।' दीपक भाई ने कहा, 'तो फिर एक काम करो, वैसे भी टाइम कम है इसलिए कपड़ा लेकर वहीं सिलने के लिए दे दो।' मैंने वहाँ सिलने के लिए दे दिए।

तीन दिन बाद सुबह 5 बजे निकलना था। जाने के एक दिन पहले रात को 11 बजे कुर्ते-पायजामें सिलकर आ गए। पूज्यश्री ने कपड़ा देखते ही कहा, "ये तो ब्लू-व्हाइट है, प्योर व्हाइट नहीं है।" मैं तुरंत समझ गया कि गड़बड़ हो गयी है। पूज्यश्री के ६जोड़ी कपड़े ब्लू-व्हाइट बन गए। गड़बड़ मैंने की थी इसलिए अंदर बहुत दुःख था।

पूज्यश्री ने इतने स्पान्टैनीयसली कहा, "एक काम करते हैं, तुमने जो प्योर व्हाइट नए कुर्ते-पायजामें सिलवाए हैं, तो तुम दुबई में सत्संग करना, मैं पास में बैठकर तुम्हें पानी दूँगा।" उनकी लघुता देखने को मिली। सामने वाले को स्लाइट भी दुःख हो जाए, हर्ट हो जाए तो बात बदल देते हैं। दीपक भाई ने कहा, "वैसे भी घर में पहनने के लिए चाहिए ही थे, एक महीने बाद सिलवाने ही थे। तो अच्छा हुआ चलो, घर में पहन लूँगा और अभी जो पुराने कपड़े हैं, एक-दो ट्रिप में और चल जाएँगे।" तुरंत ही खुद इतना एडजस्टमेन्ट ले लेते हैं कि सामने वाले को ज़रा सा भी दुःख न हो।

- देवेन कामदार

हमारे प्रिय पूज्यश्री दादाश्री के कृपापात्र तो बने ही, पर साथ ही नीरू माँ को भी विशेष तौर पर राजी कर पाए। उनके हृदय में निरंतर नीरू माँ रहती थीं। नीरू माँ का इतना राजीपा प्राप्त किया कि नीरू माँ का दिल गा उठा,...

"दीपक तू है आँख की अलौकिक रोशनी, चंदा चमके आकाश में, और तू है उसकी चांदनी।"

अक्रम मार्ग कृपा का मार्ग है और अगर प्रत्यक्ष ज्ञानी की कृपा हो जाए तो सहज ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है। नीरू माँ ने दादाश्री को राजी किया और पूज्यश्री ने दादाश्री एवं नीरू माँ दोनों को राजी किया। फिलहाल अपनी प्रत्यक्ष लिंक पूज्यश्री हैं। तो चलो, हम सब दृढ़ निश्चय करके प्रत्यक्ष ज्ञानी राजी रहें उस दिशा में छोटे-छोटे कदम बढ़ाएँ...

हर एक कार्य करने से पहले क्या प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी को यह अच्छा लगेगा?
मेरा यह कार्य कहीं मोक्ष मार्ग में बाधक तो नहीं?

हर एक कदम पर सोचते हैं, 'क्या ज्ञानी राजी होंगे?'

नीचे दी गई हर एक बात पर हम सोचें कि...
क्या प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी राजी होंगे?

मार्च 2021
वर्ष : 8, अंक : 11
अखंड क्रमांक : 95

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.